Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

उच्चतर शिक्षा संस्थानों में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अर्न्तगत बहुविषयक शिक्षा का भविष्योनमुखी दृष्टिकोण

डॉ. अनुपमा सिंह असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या.

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्याय सगं त और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने की मूलभूत आवश्यकता है। भारत द्वारा 2015 में अपनाए गये सतत विकास एजेन्डा "राष्ट्रीय शिक्षा नीति- "2020-21" जिसका लक्ष्य "2030" तक वैश्विक शिक्षा विकास को बढ़ावा देना है, विश्व में 2030 तक समावेशी और समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा को सुनिश्चित करना है। 21वीं सदी की जरूरतों के अनुकूल समस्त शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा को अधिक लचीला एवं समग्र दक्षता युक्त ज्ञान आधारित गतिशील समावेशी शिक्षा के अवसर से छात्रो में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना। बहुविषयक और समग्र शिक्षा, उच्च शैक्षिणिक सस्ंथानों में बहुविषयक पाठ्यक्रमों की श्रृखंला के माध्यम से छात्रों को समग्र शैक्षणिक एवं मानसिक दक्षता प्रदान करने का एक प्रयास है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिकल्पित लचीलेपन और गतिशीलता का समावेश विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हेतु साधित किया जा रहा है। जैसे: समावेशित शिक्षा पद्धति, बहुविषयक दृष्टिकोण, शैक्षिक सस्ंथानो का 21वीं सदी के अनुरूप नये प्रतिमानो पर खरा उतरना, व्यक्ति की शिक्षा का भविष्य में उपयोग हेतु संज्ञानात्मक प्रेरक एवं सक्रिय उपागम का समावेश, बहुआयामी दक्षता प्राप्त कराने वाली शैक्षणिक नीतियों आदि। समावेशित शिक्षा न केवल सबके लिए शिक्षा है बल्कि सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर आधारित है। इस शिक्षा प्रणाली से सभी शिक्षार्थियों के शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मूलभूत सिद्धान्त पर पाठयक्रमों का निर्माण तथा शिक्षा विधियों को लचीला बनाने पर विशेष बल दिया गया है। इसके द्वारा संभावनाओं से लाभान्वित कार्यक्षेत्र के अन्तगत कला-कौशल का विकास कर योग्यता के अनुरूप विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निखारना है जिससे न केवल उनके व्यक्तित्व का विकास हो- साथ ही समाज एवं राष्ट्र विकास निर्माण में वे सहायक बन सके। समावेशी शिक्षा का मूलमन्त्र ही यही है कि भिन्न-भिन्न विशिष्टता रखने वाले सामान्य से सामान्य छात्रो को एक अर्थपूर्ण शिक्षा, मिले। हर शैक्षणिक सस्ंथानों में समर्थ एवं असमर्थ छात्रो को एक जैसी शिक्षा प्राप्त हो जो कि उन्हे समाज में पूर्ण रूपेण आत्मनिर्भर बना सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य बहुविषयक दृष्टिकोण पर केन्द्रित है जैसे प्रबन्धन के छात्र अब आई.टी. विषयो को अपनी छोटी विशेषज्ञता के रूप में अध्यनित कर सकते है या मीडिया के छात्र योग या साइबर सुरक्षा को अपने छोटे विषय के रूप में पढ़ सकते है। बहुविषयक दृष्टिकोण के पीछे का विचार रचनात्मक को पोषित करना और पारम्परिक सीमाओं से परे आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना है, जिससे प्रत्येक छात्र चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में लचीले शिक्षणमार्ग की पेशकश की गई है। बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा पर पहले विषयगत सत्र में सुझाव दिया गया कि उच्च शिक्षण सस्ंथान बहुविषयक प्रकृति के बनकर छात्रो को समग्र शिक्षा प्रदान करे। शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण एक समय में एक से अधिक अर्थो के माध्यम से छात्रो को सीखने के लिए बहुविषयक तकनीको के उपयोग को सन्दर्भित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बहुविषयक शैक्षणिक दृष्टिकोण को हर कइि दशको के निवेश के रूप में भेजा जा रहा है। इस नीति का प्रमुख शैक्षिक लक्ष्य है देश की प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का सकल नामांकन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 2030 तक प्रत्येक राज्य एवं राज्यों के जिले में कई बड़ें बहुविषयक शैक्षणिक सस्ंथानों को खोलना। विषयों को चुनने का लचीलापन, विज्ञान के साथ कला, ललित कला, खेल के साथ-साथ मानविकी के छात्रो को विषय चुनने की विस्तृत सकं ल्पना,

विषयों के रचनात्मक संयोजन के साथ अत्याधुनिक पाठ्यक्रम, लचीले विकल्प और अंडर ग्रेजुएट पाठ्यक्रम के दौरान कई प्रवेश और निकास विकल्प। बहुविषयक शिक्षा और अनुसन्धान विश्वविघालय वास्तव में शिक्षा प्रणाली में एक नये MERV बनाने का प्रयास है।

"शिक्षण के भविष्य को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक सस्ंथानों केा 21वीं सदी के नये प्रतिमान की आवश्यकता है।"

2030 तक देश के प्रत्येक राज्य, राज्यों में जिलेवार का बड़ा बहुविषयक महाविघालय-2030 तक समान्त उच्च शिक्षा बहुविषयक सस्ंथान वन जायेगें और उनमे से प्रत्येक के पास कम से कम सभी स्तरो पर शिक्षा की सार्वभौमिकता पहुँच होगी। संगीत, कला और साहित्य के साथ गणित, सांख्यकी, अनप्रयुक्त विज्ञान, समाज एवं अर्थशास्त्र खेल आदि अनेक पाठ्यक्रमों का समावेशन एक साथ होगा। 2015 में इन्स्ट्यूटो टेक्नोलोजिको डे मॉन्टरी ने संस्थान के मूल में सम्पूर्ण शैक्षिण मॉडल पर पुर्नविचार करने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू किया। टेक 21 शैक्षिक मॉडल नामक यह कार्यक्रम सीखने के नए तरीको के उद्भव और शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की प्रमुखता के प्रत्यक्ष जवाब में हैं। जिसका मुख्य पहलू एक शैक्षणिक सरंचना विकसित करना जो समाज के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ असाधारण पेशेवरों के निर्माण में योगदान दे, जो मानवतावादी विश्वदृष्टि में निहित हों और अन्तः विषय और सहयोगी सीखने की गहरी समझ रखता है। टेक-21 विश्वविद्यालय के वर्तमान सन्दर्भ को पूरे विश्वविद्यालयी प्रणाली के लिए शिक्षण और सीखने के तरीकों की पर्नूकल्पना करने के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ आत्मसात करता है और 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए वर्तमान पीढ़ी की क्षमताओं को बढ़ाने की ओर देखता है।

टेक- 21 का नया शैक्षिक प्रतिमान छात्रों को आज की अर्थव्यवस्था और संस्कृतियों के लिए तैयार करता है। छात्र अपना स्वयं का पाठ्यक्रम और अद्वितीय शैक्षणिक अनुभव बनाने में सक्षम होगें । स्नातक स्तर से आगे के जीवन के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण को शामिल करता है। जो कि शिक्षण पद्धती में परिवर्तन को परिसर स्थान के परिवर्तन द्वारा समर्थित करता है। टेक 21 शैक्षणिक सरंचना तीन प्राथमिक आयोजन तत्वों द्वारा संचालित होती है।

मॉड्यूल:- इनमें अगली पीढ़ी के निर्देशानुसार और शोध स्थान शामिल है। जिसमें मुख्य रूप से बहुमुखी सक्रिय शिक्षण कक्षा टाइपोलॉजी शामिल है। जो संचालित वातावरण में केन्द्रित अध्ययन की सुविधा प्रदान करते है। मॉड्यूल सहयोगी और अनौपचारिक अध्ययन के लिए स्थानों के निकट स्थित हैं और वशिष्ठ दक्षताओं और अनुदेशात्मक गतिविधियों के विकास का समर्थन करने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे से लैस होती है।

चुनौती भरें स्थान:-

ये छात्र और संकाय के सहयोग परियोजना कार्य और विचार मंथन की सुविधा प्रदान करते हैं। चुनौती भरें स्थानों को विभिन्न पक्कारों में व्यवस्थित किया जाता है जिसमें 2-4 छात्रों को समायोजित करने वाली सहयागेी कमरें से लेकर बड़े प्रयोग और व्यवहारिक सिखाने के लिए बहुउद्देशीय शेड तक शामिल है। परिसर को भी परीक्षण और अनुसन्धान की सुविधा के लिए संरचित किया जाता है।

मुल्यांकन स्थानः-

मुल्यांकन स्थान अत्यधिक सार्वजनिक स्थानों पर स्थित है और वे पैनलों स्क्रीन और लचीलें, बुनियादी ढ़ाचे से सुसज्जित होता है। जो गतिविधियों के विभिन्न पैमानों को समायोजित करने के लिए स्थान के पुर्नगठन को सक्षम बनाता है। नई शिक्षा पद्धति के लिए टेक 21 का पाठ्यक्रम मुख्य शिक्षा चुनौति आधारित शिक्षा और समाधानों की सार्वजनिक प्रस्तुति का एक चक्र बनाता है? नई शिक्षा नीति में शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य परिवर्तनकारी भविष्य के उन ढ़ांचों को परिवर्तित करना है जो यह परिभाषित करते है कि व्यक्ति भविष्य के साथ किस प्रकार जुड़ता है एवं उसकी शिक्षा का भविष्य में उपयोग करने के सज्ञं ानात्मक प्रेरक और सक्रिय उपागम किस प्रकार कारगर साबित होते हैं। व्यक्तिगत भविष्य की क्षमता निर्माण के लिए अधिक से अधिक बहुआयामी दक्षता प्राप्त करने ही इस नई शैक्षणिक पद्धति का मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य है।

REFERENCES

1. National education policy 2020 Ministry of human resource development Government of India page-7
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति - तरूणधर दीवान
3. Education Research & Development (Multidisciplinary Subjects) by- Dr. Harish Kumar Yadav
4. WWW.Sasaki.com (sasaki education model)
5. Multidisciplinary Approaches to educational Research edited by- Saddaj Rijvi